उच्च शिक्षा में नई शिक्षा नीति 2020 के प्रभाव का समाजशास्त्रीय अध्ययन

Rekha

M.A. in sociology
Assistant Professor Sociology (VSY)
Govt Girls College Bardod
Address Khairthal (Alwar) Rajasthan

प्रस्तावना :–

सामाजिक क्षमताओं का विकास करना है, जिससे वह दैनिक जीवन की मांगों और चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हो। हर बच्चे के पास अद्वितीय व्यक्तित्व लक्षण, रुचियां प्राथमिकताएं, मूल्य, दृष्टिकोण, ताकत और कमजोरियां हैं। पाठ्यक्रम ऐसा होगा जिससे बच्चा अपने अद्वितीयता के अनुरूप दुनिया में अपना अनूठा स्थान खोजने में सक्षम हो, इसके लिए बच्चे का सर्वांगीण विकास बेहद जरूरी है।

- समग्र विकास क्या है?
- समग्र विकास क्यों आवश्यक है?
- समग्र विकास के प्रमुख तत्व क्या है? तथा
- निष्कर्ष

समग्र शिक्षा शिक्षार्थी के मन शरीर और आत्मा सहित सभी पहलुओं को शामिल करता है। इसके पीछे दर्शन यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने स्थानीय समुदाय प्राकृतिक दुनिया और मानवतावादी संबंधों के माध्यम से जीवन में पहचान और अर्थ और उद्देश्य पाता है करुणा और शांति जैसे मूल्यों का विकास होता है।

समग्र शिक्षा लोगों के जीवन के लिए आंतरिक श्रद्धा, सीखने के लिए प्रेम, अनुभवात्मक शिक्षा, सीखने के माहौल के भीतर संबंधों और प्राथमिक मानव मूल्यों पर महत्व देता है। समग्र शिक्षा के विकास का इतिहास समग्र शिक्षा का आधुनिक लुक एंड फील दो कारकों के माध्यम से जुड़ा हुआ है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद मानवतावादी दर्शन का उदय और 1960 के मध्य में शुरू हुआ सांस्कृतिक प्रतिमान बदलाव। 1970 में मनोविज्ञान में समग्रता आंदोलन की बहुत अधिक मुख्यधारा बन जाने के बाद विज्ञान, दर्शन और सांस्कृतिक इतिहास में साहित्य की एक उभरते निकाय ने शिक्षा को समझने की इस तरीके का वर्णन करने के लिए एक व्यापक अवधारणा प्रस्तुत की एक परिपेक्ष्य जिसे समग्रता के रूप में जाना जाता है। 2000 के दशक की शुरुआत से ऐतिहासिक रूप से अलग शैक्षणिक क्षेत्रों, एक ओर विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित और दूसरी और दूसरी ओर मानविकी, कला और सामाजिक विज्ञान ने नया समय सामान्य पाया है। सामाजिक और व्यवहार विज्ञान को एकीकृत करने और उच्च शिक्षा में विज्ञान, इंजीनियरिंग और चिकित्सा के साथ मानविकी और कला के एकीकरण पर आम सहमति रिपोर्ट में प्रदर्शित किया है।

समग्र शिक्षा के लिए दार्शनिक ढांचा–शिक्षा समग्र शिक्षा का उद्देश्य छात्रों को समग्र दृष्टिकोण के साथ बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक, शारीरिक, कलात्मक, रचनात्मक और आध्यात्मिक और क्षमता के विकास से संबंध रखना है। यह छात्रों को शिक्षण की प्रक्रिया में शामिल करना चाहता है और व्यक्तिगत और सामूहिक जिम्मेदारी को प्रोत्साहित करता है। समग्र शिक्षा के सामान्य दर्शन का वर्णन करते हुए इसे दो भागों में विभाजित किया है।

- परमता का विचार और
- दूरदर्शी क्षमता की धारणा

परमता का विचारः अलग–अलग क्षेत्रों में इसकी अलग–अलग व्याख्या की है। धार्मिक रूप से प्रबुद्ध बनने के रुप में आध्यात्मिकता एक महत्वपूर्ण घटक है, क्योंकि यह सभी जीवित चीजों की जुड़ाव देती है और आंतरिक और बाहरी जीवन के बीच सामंजस्य पर जोर देती है। मनोवैज्ञानिक आत्मबोध के रूप में समग्र शिक्षा का मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में कुछ बनने का प्रयास करना चाहिए जो हो सकता है। द बेस्ट वर्जन ऑफ हिमसेल्फ अपरिभाषित यएक व्यक्ति उस अंतिम सीमा तक विकसित होता है जहां तक मानव पहुंच सकता है अर्थात मानव आत्मा की उच्चतम आकांक्षाओं की ओर बढ़ना।

विवेकपूर्ण क्षमता के रूप में स्वतंत्रता को मनोवैज्ञानिक अर्थ में लिया है। अच्छा निर्णय है स्वशासन के रूप में, प्रत्येक छात्र अपने तरीके से सीखता है। सामाजिक क्षमता सिर्फ सामाजिक कौशल सीखने से ज्यादा है। परिष्कृत मूल्य के द्वारा चरित्र का विकास होता है। आत्मज्ञान भावनात्मक विकास करता है।
पाठ्यक्रम के लिए समग्र शिक्षा के अनुप्रयोग को परिवर्तनकारी शिक्षा के रूप में वर्णित किया गया है। जहां निर्देश शिक्षार्थी की संपूर्णता को पहचानता है। संपूर्ण व्यक्ति को शिक्षित करने की मांग करते हुए समग्र शिक्षा के केंद्रीय विषयों को स्पष्ट करने के प्रयास किए गए हैं। – समग्र शिक्षा में बुनियादी तीन आर को शिक्षा कहा गया हैय रिश्ते रिलेशन

- जिम्मेदारी रिस्पांसिबिलिटी
- सभी जीवन के लिए सम्मान रेस्पेक्ट

आत्म सम्मान के साथ में सीखना बहुत महत्वपूर्ण है। रिश्तो में सीखने का अर्थ है सामाजिक साक्षरता। सामाजिक प्रभाव को देखना और सीखना। लचीलापन का अर्थ है कठिनाइयों पर काबू पाना है, चुनौतियों का सामना करना, दीर्घ कालीन सफलता सुनिश्चित करने के तरीके सीखना। सौंदर्यशास्त्र के बारे में सीखने का अर्थ है आसपास के सौंदर्य को देखने में प्रोत्साहित करना और जीवन में विस्मय करना सीखाता है। शिक्षक द्वारा प्रत्येक बच्चे को सुनने और बच्चे को अपने भीतर निहित चीजों को बाहर निकालने में मदद करने से समग्रता प्राप्त होती है।

समग्र शिक्षा के उपकरण या शिक्षण रणनीतियां :–

समग्र शिक्षा इस सवाल का समाधान करने के लिए कई रणनीतियों को बढ़ावा देती है कि कैसे पढ़ाना है और लोग कैसे सीखते हैं? सबसे पहले समग्रता का विचार सीखने के लिए एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण की वकालत करता है। इस परिवर्तन में मन की आदतें और विश्व दृष्टि शामिल हो सकते हैं। छात्रों को इस बात पर गंभीर रूप से प्रतिबंधित करने के लिए पढ़ाना आवश्यक हैं कि हम जानकारी को कैसे जानते हैं ? या समझते हैं? इनपुट कैसे करते हैं? यदि हम छात्रों को महत्वपूर्ण और चिंतनशील सोच, कौशल विकसित करने के लिए कहते हैं और उन्हें अपने आसपास की दुनिया की देखभाल करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं तो वे तय कर सकते हैं कि कुछ हद तक व्यक्तिगत या सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता है । समग्रता जीवन और जीवन के विभिन्न पहलुओं को एकीकृत और जुड़ा हुआ देखती है इसलिए शिक्षा को सीखने को कई अलग–अलग घटको में अलग नहीं करना चाहिए।
समग्र शिक्षा में ट्रांसडिसीप्लिनरी इंक्वायरी की अवधारणा है। ट्रांसडिसीप्लिनरी इंक्वायरी इस आधार पर आधारित है कि विषयों के बीच विभाजन समाप्त हो गया है, संसार को जितना हो सके समग्र रूप में समझना चाहिए ना की खंडित भागों में ट्रांसडिसीप्लिनरी एप्रोच में कई अनुशासन शामिल होते हैं और विषयों से परे नए दृष्टिकोण की संभावना के साथ विषयों के बीच का स्थान होता है।
समग्र शिक्षा के अनुसार सीखने की प्रक्रिया में सार्थकता भी महत्वपूर्ण कारक है। समग्र शिक्षण संस्थाएं प्रत्येक व्यक्ति की अर्थ संरचनाओं के साथ सम्मान और काम करना चाहते हैं। एक विषय की शुरुआत इस बात से शुरू होगी कि कोई छात्र अपने विश्व दृष्टि से क्या जान या समझ सकता है? दूसरों के लिए क्या मायने रखता है? इसके बजाय उनके लिए क्या मायने रखता है?
मेटा लर्निंगय एक और अवधारणा है जो सार्थकता से जुड़ता है, सीखने की प्रक्रिया में अंतर्निहित अर्थ खोजने और यह समझने में कि वे कैसे सीखते हैं? छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि वह अपने स्वयं की सीखने को आत्मा विनियमित करें। हालांकि समग्र शिक्षा में समुदाय की प्रकृति के कारण छात्र कक्षा के अंदर और बाहर दूसरों पर निर्भरता के माध्यम से अपने स्वयं के सीखने के निगरानी करना सीखते हैं। समग्र शिक्षा में समुदाय एक अभिन्न पहलू है जो कि रिश्ते और रिश्तो के बारे में सीखना खुद को समझने की कुंजी है। इसलिए इस सीखने की प्रक्रिया में समुदाय का पहलू महत्वपूर्ण है। समग्र शिक्षा में कक्षा को अक्सर एक समुदाय के रूप में देखा जाता है, जो शिक्षण संस्था के बड़े समुदाय के भीतर है, जो गांव कस्बे या शहर के बड़े समुदाय के भीतर है और जो विस्तार से भीतर से मानवता का बड़ा समुदाय।

समग्र विकास क्या है?

समग्र विकास सीखने का व्यापक दृष्टिकोण है जिसका उद्देश्य मानव मस्तिष्क के कई पहलुओं को विकसित करना है। समग्र विकास का उद्देश्य शारीरिक क्षमताओं, बौद्धिक क्षमताओ, भावनात्मक क्षमताओ और सामाजिक कौशलों का विकास करना है।

- शारीरिक क्षमता विकास में पांच इंद्रियों से जागरूक रूप से सीखना होता है ज्यादातर दृष्टि, स्पर्श और श्रवण से हैं। उदाहरण के लिए पेंटिंग करना, सब्जियां काटना, मिट्टी का मॉडल बनाना, कंप्यूटर की बोर्ड पर टाइप करना, मेडिकल सर्जरी, ड्राइविंग, लिखना आदि।

समग्र शिक्षा की उत्पत्ति प्राचीन ग्रीस में हुई थी । वह विधि जो किसी व्यक्ति के अनुभव के एक या कुछ हिस्सों के बजाय पूरे व्यक्ति पर केंद्रित हो। इसके पीछे दृष्टिकोण यह है कि दुनिया एक है और सीखने को मनुष्य के सभी अनुभवों से अलग नहीं किया जा सकता है।
स्मट्स को होलिज्म का संस्थापक माना जाता है जिसका अर्थ है संपूर्ण। 1926 में पुस्तक होलिज्म एंड इवोल्यूशन में स्मट्स होलिज्म का वर्णन प्रकृति में संपूर्ण बनाने की प्रवृत्ति के रूप में करते हैं।
आज इस काम को सिस्टम थिंकिंग, जटिलता सिद्धांत, तंत्रिका नेटवर्क, सिमेंटिक समग्रता, समग्र शिक्षा और पारिस्थितिकी में सामान्य सिस्टम सिद्धांत के लिए नींव के रूप में मान्यता प्राप्त है।

• बौद्धिक क्षमता और संज्ञानात्मक क्षमता विकास में निम्नलिखित गतिविधियां शामिल हैः– सूचना और अनुभव से सीखने की क्षमता का विकास, डेटा और सूचना से सीखना, गतिविधि करने से सीखना इत्यादि। अमूर्त सोच क्षमताओं का विकास में अवधारणाओं, विचारों, सिद्धांतों और वस्तुओं के बारे में समझना और सोचना, जो भौतिक रूप से मौजूद नहीं है।
समझने की क्षमता का विकास में लिखित और मौखिक जानकारी को समझने और समझाने की क्षमता। तार्किक और विश्लेषणात्मक सोच क्षमताओं का विकास में घटनाओं और स्थितियों के पीछे के कारणों का विश्लेषण करना, किसी घटना या स्थिति के पीछे के कारणों को समझना इत्यादि। महत्वपूर्ण सूचनाओं का विकास में अवधारणाओं, विचारों, समस्याओं और मुद्दों आदि की जांच करना। रचनात्मक सोच क्षमताओं का विकास में समस्याओं को हल करने के नए तरीकों की सोच, दृश्य, नए विचारों की सोच वगैरह इसमें शामिल होते हैं।
समस्या समाधान क्षमताओं का विकास में विभिन्न अवधारणाओं, समाधानो आदि का उपयोग करके समस्याओं को हल करना।

• भावनात्मक क्षमता विकास में शामिल हैः अंतर व्यक्तिगत क्षमताओं का विकास इसमें आत्म समझ (किसी की ताकत और कमजोरियों, क्षमताओं आदि की समझ) और आत्मविश्वास।
पारस्परिक क्षमताओं का विकास में दूसरों को समझने की क्षमता, दूसरे क्या संचार कर रहे हैं? संबंध बताना, आदि। स्व–नियमन क्षमताओं का विकास में भावनाओं और भावनाओं को नियंत्रित करने क्षमता। सहानुभूति का विकास में दूसरों की भावनाओं और भावनाओं को समझने और साझा करने की क्षमता का विकास। सामाजिक दक्षताओं का विकास में दूसरों के साथ बातचीत करने और संवाद करने की क्षमता, एक टीम में काम करना, समन्वय और दूसरों के साथ सहयोग करना शामिल है।

• सामाजिक कौशल विकास में शामिल है छात्र व्यापक, गतिशील और परस्पर जुड़े हुए कौशल तेजी से और प्रभावी ढंग से प्राप्त कर सकता है।

समग्र विकास में शिक्षक और परामर्शदाताओं का उद्देश्य प्रत्येक बच्चे की व्यक्तिगत क्षमताओं का चार्ट बनाना और उनकी क्षमताओं की तुलना छात्र की उम्र के मानदंडों से तय करना है। तुलनात्मक विश्लेषण और उसके परिणामों का उपयोग समझने के लिए किया जाता है। छात्र के लक्षण और उसके पर्यावरण के पहलू उसके वृद्धि और विकास को कैसे प्रभावित कर सकते हैं? छात्रों का समग्र विकास शारीरिक, भावनात्मक, आध्यात्मिक, संबंधपरक और बौद्धिक पहलुओं जैसे कई कारकों को संबोधित करना चाहता है। समग्र दृष्टिकोण का महत्व इस तथ्य में निहित है कि छात्र विभिन्न कौशलों को चरणबद्ध तरीके से सीखते हैं जिसमें चलना, दौड़ना, बात करना, ठीक मोटर कौशल आदि शामिल है।

समग्र विकास क्यों?

आजकल न केवल कंपनियां या संगठन एक छात्र के समग्र शैक्षणिक प्रदर्शन पर विचार करते हैं । साथ ही विभिन्न नौकरियों के लिए भर्ती करते समय छात्रों के समग्र विकास पर भी विचार करते हैं। शुरुआत से ही बच्चे को विभिन्न प्रकार के खेल गतिविधियों से अवगत कराया जाता है उसे नहीं चीजें सीखने में सक्षम बनाता है। नए युग की तकनीकी और शिक्षण विधियों के आगमन के साथ छात्रों को पढ़ाने के तरीके में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है और समग्र विकास की आवश्यकता बन गया है।

समग्र विकास के प्रमुख तत्व :–

संज्ञानात्मक औसत मस्तिष्क 5 वर्ष की आयु तक अपनी क्षमता का 90ः विकसित हो जाता है । युवा दिमाग सूचनाओं को अवशोषित करने, नोटिस करने, कुछ गतिविधियों और व्यवहारों को अपनाने में तेज होते हैं। उचित मार्गदर्शन से इसमें महारत हासिल कर सकते हैं इसमें सोच, समस्या समाधान और अवधारणाओं की समझ शामिल है। यह समग्र विकास के महत्वपूर्ण तत्वों में से है ।

• भाषाः भाषा और भाषण परवरिश प्रक्रिया के अभिन्न अंग है। अच्छी तरह से बोलना और स्पष्ट करना आज की दुनिया में आवश्यक कौशल है। मातृभाषा, सरल से जटिल और फिर अन्य भाषाओँ की ओर बढ़ते हैं। यह समग्र विकास में महत्वपूर्ण तत्व है।

• सामाजिक भावनात्मकः मस्तिष्क के सामाजिक और भावनात्मक पक्षों को सामने लाने के लिए छात्रों को ऐसे अनुभवों से गुजरने की आवश्यकता होती है जो भावनाओं पर नियंत्रण रखते हुए सकारात्मक संबंधों के प्रावधान की अनुमति देते हैं। विश्वास और सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण अंगों के बिना एक बच्चा बड़ा होकर असंतुलित हो सकता है। विकास के वर्षों में बच्चे को ध्यान और स्नेह की आवश्यकता होती है। वे अपनी क्षमताओं और भावनाओं में आत्मविश्वास और सुरक्षित होना सीखते हैं और भविष्य के लिए तैयार होते हैं । शिक्षक, माता–पिता समग्र विकास सुनिश्चित करने के लिए एक सुरक्षित और मैत्रीपूर्ण वातावरण बनाए रखकर सहयोग करते हैं।

• नौकरियो के साथ प्रशिक्षण की भी आवश्यकता है क्योंकि युवा मन को आत्मसंयम या अपनी अनियंत्रित भावनाओं पर नियंत्रण और भावनाओं की समझ को प्रोत्साहित कर सकें। मस्तिष्क विकास के साथ क्रोध और उदासी जैसी भावनाये उत्पन्न होती हैं होती है जिन को नियंत्रित करने के लिए सहायता की आवश्यकता होती है। क्रोध प्रबंधन, संवेदनशीलता, अवसाद, अहंकार आदि से निपटना स्वस्थ सामाजिक भावनात्मक विकास के पहलू हैं।

• भौतिकः बच्चों में निरंकुश ऊर्जा होती है। समग्र विकास के लिए तंत्रिका संबंध बनाने के लिए एक यह ऊर्जा आवश्यक है। इस प्रकार व्यायाम और किसी भी प्रकार की गतिविधियों से शरीर में रक्तप्रवाह बढ़ जाता है। बच्चे में नई जानकारी और अवधारणाओं को प्राप्त करने में सक्षम हो जाता है। यह बच्चे को स्वस्थ और फिट रहने में सक्षम बनाता है। बच्चे अपने संवेदी समझ के बारे में अधिक जागरूक होना सीखते हैं।

निष्कर्षत

आज विद्यार्थियों को अकादमिक पाठ के साथ स्वस्थ और कार्यात्मक संबंधों का निर्माण करने की साथ लचीलापन और टीम भावना विकसित करने के बारे में सिखाते हैं। इससे विद्यार्थी स्वयं भावनाओं और मानसिक दबाव को समझने में मदद मिलती है। छात्र के मनोबल को और बढ़ाती है इससे भी देश के विकास और विकास में योगदान देने वाले समाज के प्रतिष्ठित नागरिक बनकर अपने कैरियर में अधिक ऊंचाइयां प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए छात्रों का समग्र विकास महत्वपूर्ण है। इसमें कैरियर सलाहकार और विशेषज्ञ महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं क्योंकि वह कार्य जीवन में भविष्य की सफलता के आवश्यक कौशल को समझते हैं। समग्र शिक्षा में शिक्षक की भूमिका यह होनी चाहिए कि समग्र विकास में शिक्षक को प्राधिकरण के व्यक्ति के रूप में कम देखा जाता है जो नेतृत्व और नियंत्रण करता है बल्कि उसे एक दोस्त,एक संरक्षक, एक सहायक या एक अनुभवी यात्रा साथी के रूप में देखा जाना चाहिए। जहां छात्र और वयस्क एक पारस्परिक लक्ष्य की ओर काम करते हैं। खुले और इमानदार संचार की अपेक्षा की जाती है और लोगों के बीच मतभेदों का सम्मान और साथ सराहना की जाती है द्य प्रतिस्पर्धा के बजाय सहयोग आदर्श है।

NEP 2020 के मौलिक सिद्धान्त :–

• छात्रों के समग्र विकास को बढावा देने के लिए शैक्षणिक और गैर–शैक्षणिक दोनों क्षेत्रों में छात्र की अनूठी क्षमताओं को पहचानना और बढ़ावा देना। इस हेतु शिक्षकों के साथ–साथ माता–पिता को भी संवेदनशील बनना पड़ेगा।

• शिक्षार्थी अपनी प्रतिभा और रूचियों के अनुसार जीवन में अपना रास्ता चुन सके इस हेतु आवश्यक सीखने का पथ और कार्यक्रम को सुनने की उसमें क्षमता होनी चाहिए। सीखने के विभिन्न क्षेत्रों के बीच लचीलापन होना जैसे और कला और विज्ञान व्यावसायिक और शैक्षणिक के बीच।

• ज्ञान की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने के लिए विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी और खेल में बहुविषयक और समग्र शिक्षा के प्रोत्साहन दिया जाए। रहने के बजाय व वैचारिक समझ पर जोर, तार्किक निर्णय और नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए रचनात्मकता को बढ़ावा देना।

• नैतिकता और मानवीय और संवैधानिक मूल्य जैसे सहानुभूति, इसरा के लिए सम्मान, स्वच्छता, शिष्टाचार, लोकतांत्रिक भावना, सेवा की भावना, सार्वजनिक संपति के लिए सम्मान, वैज्ञानिक स्वभाव, स्वतन्त्रता, जिम्मेदारी बहुलवाद, समानता और न्याय के साथ शिक्षण और सीखने में बहुभाषावाद को बढ़ावा देना। साथ ही जीवन कौशल जैसे संचार, सहयोग और टीम वर्क को बढ़ावा देना।

• नियमित रचनात्मक मूल्यांकन पर ध्यान देना।

• शिक्षण और सीखने में प्रौद्योगिकी का व्यापक उपयोग करना, दिव्यांग छात्रों के लिए सुलभ करना।

• शैक्षिक योजना और प्रबन्धन के कार्य करना, शैक्षिक निर्णयों और प्रणली आधारशिला ऐसी हो जिसमें सभी छात्र फल–फूल सके। स्कूली शिक्षा से उच्च शिक्षा तक सभी स्तरों पर पाठ्यक्रम में तालमेल होना चाहिए।

• 'हल्का लेकिन चुस्त' नियामक ढाँचा विकसित करना जिसमें शिक्षक की भर्ती, निरन्तर व्यावसायिक विकास, सकारात्मक कार्य वातावरण और सेवा शर्तें हो। स्वायत्वता, सुशासन और सशक्तिकरण के माध्यम से नवाचार को प्रोत्साहित करना। सार्वजनिक प्रकटीकरण के द्वारा शैक्षिक प्रणाली की अखंडता, पारदर्शिता और संसाधन दक्षता को सुनिश्चित करना।

• शैक्षिक विशेषज्ञों द्वारा अनुसंधान और मूल्यांकन के आधार पर प्रगति की निरन्तर समीक्षा करना जिससे उत्कृष्ट शिक्षा और विकास को सुनिश्चित किया जा सके।

• भारतीय की समृद्ध, विविध, प्राचीन और आधुनिक संस्कृति और ज्ञान प्रणालियों और परम्पराओं में गर्व की अनुभूति करना।

• शिक्षा जनसेवा है और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हर बच्चे का बुनियादी अधिकार माना जाना चाहिए।

NEP 2020 की दृष्टि

• भारत को एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाने हेतु भारतीय लोकाचार में निहित उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा सभी को प्रदान करनी होगी।

• शैक्षणिक संस्थानों के पाठ्यक्रम और अध्यापन में संवैधानिक मूल्यों और मौलिक कर्त्तव्यों के प्रति सम्मान की भावना हो। परिवर्तनशील विश्व ने अपने उत्तरदायित्वों और भूमिकाओं के बारे में जागरूक होना चाहिए।

• मानवीय अधिकारों और विकास के प्रति प्रतिबद्ध ज्ञान, कौशल, मूल्यों और स्वभाव का विकास करें। विचार, आत्मा, बुद्धि और कार्यों में भारतीयता की गहराई दिखें।

गुणवत्ता विश्वविद्यालय और कॉलेज :–

अच्छे, विचारशील, सर्वांगीण और रचनात्मक व्यक्तियों के विकास के लिए वह व्यक्ति गहन रूचि के एक या एकाधिक विशिष्ट क्षेत्रों को अध्ययन करें और चरित्र, नैतिक और संवैधानिक मूल्यों, बौद्धिक जिज्ञासा, वैज्ञानिक स्वभाव, रचनात्मकता, सेवा–भावना और 21वीं सदी की क्षमताओं को विकसित करें और समाज में उत्पादक योगदान दे। आर्थिक–स्वतन्त्रता को सक्षम बनाने के लिए छात्रों को सार्थक, संतोषजनक जीवन और कार्य भूमिकाओं के लिए तैयार करना चाहिए।

वर्तमान उच्च शिक्षा प्रणाली के सम्मुख प्रमुख समस्यायें और वांचित परिवर्तन

• पूरे भारत में जो स्थानीय/भारतीय भाषाओं में शिक्षा का माध्यम प्रदान करते है उससे अधिक बहुविषयक स्नातक शिक्षा की ओर बढ़ना।

• पाठ्यचर्चा, शिक्षाशास्त्र, मूल्यांकन और छात्र समर्थन में सुधार।

• NRF की स्थापना हेतु संकाय और संस्थागत नेतृत्व के पदों की अखंडता की पुष्टि करना।

• शैक्षणिक और प्रशासनिक स्वायत्ता वाले स्वतन्त्र बोर्डो द्वारा HEIS का शासन।

• उच्च शिक्षा हेतु एकल नियामक द्वारा 'हल्का लेकिन कड़ा' विनियमन होना चाहिए।

संस्थागत पुर्नगठन और सनकेनः–

• 2030 तक हर जिले में एक बहुविषयक उर्च्च शिक्षा संस्थान होगा और 2040 तक सभी HEI बहुविषयक संस्थान बनने का लाभ रखेंगे। सार्वजनिक और निजी दोनों संस्थानों के विकास पर जोर। सिंगल स्ट्रील HEI समय के साथ समाप्त हो जाएगा।

• विश्वविद्यालय का मतलब उच्च शिक्षा का एक बहु–विषयक संस्थान होगा जो शिक्षण और अनुसंधान पर समान जोर देते है अर्थात् अनुसंधान गहन विश्वविद्यालय। साथ ही जो सामुदायिक जुड़ाव के साथ स्नातक कार्यक्रम प्रदान करता है।

• HEIS को अपनी योजनाओं, कार्यों और प्रभावशीलता के आधार पर एक श्रेणी से दूसरी श्रेणी में जाने की स्वायत्ता और स्वतन्त्रता होगी जिसके लिए पारदर्शी प्रणाली होगी और चरणवार तत्र स्थापित किया जाएगा।

• HEIS] दूसरी HEIS के विकास, सामुदायिक जुड़ाव, सेवा, अभ्यास, संकाय विकास में सहायता करेगा और मान्यता प्राप्त संस्थान च्व्स् (ओपन डिस्टेंस लर्निंग) और ऑनलाईन कार्यक्रम चला पाएंगे।

• समग्र उच्च शिक्षा क्षेत्र का उद्देश्य पेशेवर और व्यावसायिक शिक्षा सहित एक एकीकृत उच्च शिक्षा प्रणाली बनना है साथ ही HEIS के वर्तमान जटिल नामकरण को बदलकर यूनिवर्सिटी कर दिया जाएगा, बशर्ते वह मानदण्डों को पूरा करें।

समग्रता और बहुविषयक शिक्षा को प्रोत्साहन

• मनुष्य की सभी क्षमताओं जैसे बौद्धिक, सौन्दर्य परक, सामाजिक, शारीरिक, भावनात्मक और नैतिक क्षमताओं को एकीकृत तरीके से विकसित करना। ऐसी समग्र शिक्षा भविष्य में पेशेवर, तकनीकी और व्यावसायिक विषयों के साथ सभी स्नातक कार्यक्रमों में भी दृष्टिगोचर होगी।

• इंजीनियरिंग संस्थान (IIT) कला और मानविकी के साथ तथा कला और मानविकी के छात्र विज्ञान सीखने का लक्ष्य रखेंगे और अधिक व्यावसायिक विषयों और सॉफ्ट स्किल्स को शामिल करने का प्रयास करेंगे। कल्पनाशीलता और लचीलेपन से रचनात्मक संयोजन सक्षम होगा और कई प्रवेश और विकास के बिन्दू होंगे।

• HEIS को मजबूत करने के लिए भाषा, साहित्य, संगीत, दर्शनशास्त्र, इंडोलॉजी, कला, नृत्य, रंगमंच, शिक्षा, गणित, सांख्यिकी, शुद्ध और अनुप्रयूक्त विज्ञान, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, खेल, अनुवाद और व्याख्या आदि विभागों की स्थापना की जाएगी।

• HEIS के पाठ्यक्रम में सामुदायिक जुड़ाव और सेवा, पर्यावरण शिक्षा और मूल्य आधारित शिक्षा के क्षेत्रों में क्रेडिट आधारित पाठ्यक्रम और परियोजनाएँ शामिल होगी।

• स्नातक की डिग्री 3 या 4 साल की अवधि की होगी जिसमें कई निकास के विकल्प भी होंगे। 1 वर्ष पूर्ण करने पर प्रमाण–पत्र, 2 वर्ष पर डिप्लोमा, 3 वर्ष पर स्नातक डिग्री और 4 वर्ष पर बहुविषयक स्नातक कार्यक्रम विकल्प के रूप में रहेंगे।

• HEI से डिग्री प्राप्त करने के लिए मान्यता प्राप्त HEIS से अर्जित शैक्षणिक क्रेडिट को डिजिटल रूप में संग्रहित करने के लिए अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट (ABC) स्थापित किया जाएगा।

• गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में उच्चतम वैश्विक मानकों को प्राप्त करने हेतु प्प्ज्ए प्प्ड के समकक्ष बहुविषयी शिक्षा और अनुसंधान विश्वविद्यालय (MERUS) स्थापित किए जाएंगे।

• अनुसंधान और नवाचार की दिशा में HEIS स्टार्ट अप इन्क्यूबेशन सेंटर, प्रौद्योगिकी विकास केन्द्र, अनुसंधान के अग्रणी क्षेत्रों में केन्द्र, अधिक उद्योग अकादमिक संपर्क, और मानविकी और सामाजिक विज्ञान अनुसंधान सहित अन्तःविषय अनुसंधान की स्थपना करेगा।

इपटतन सीखने के वातावरण और छात्रों के लिए समर्थन :–

• नवाचार और लचीलेपन को बढ़ाने के लिए CBCS (चाइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम) को संशोधित किया जाएगा। HEI द्वारा मूल्यांकन प्रणालिया तय की जाएगी। पाठ्यक्रम, शिक्षा शास्त्र और मूल्यांकन हेतु संस्थानों और संकाय के पास नवाचार स्वायत्तता होगी।

• HEIS अधिक निरन्तर और व्यापक मूल्यांकन की ओर जाएगा।

• छात्रों को उच्च गुणवत्ता वाले सहायता केन्द्र और पेशेवर शैक्षणिक और कैरियर परामर्श उपलब्ध कराया जाएगा।

• HEIS में ODL की गुणवत्ता के लिए रूपरेखा तैयार की जाएगी जिसमें व्क्स के प्रणालीगत विकास, विनियमन और मान्यता के लिए मानदंड, मानक और दिशा–निर्देश तैयार किए जाएंगे। इन क्लास, ऑनलाइन और व्क्स मोड के साथ छात्र समर्थन सहित सभी विषयों में सभी कार्यक्रम, पाठ्यक्रम का उद्देश्य गुणवत्ता के वैश्विक मानको को प्राप्त करना होगा।

• अन्तर्राष्ट्रीयकरण

• भारत को सस्ती कीमत पर प्रीमियम शिक्षा प्रदान करने वाले वैश्विक अध्ययन गंतव्य के रूप में प्रचारित किया जाएगा। बड़ी संख्या में अन्तर्राष्ट्रीय छात्र भारत में अध्ययन कर रहे है। भारत में छात्रों की अधिक गतिशीलता, विदेशी संस्थानों ने यात्रा, अध्ययन क्रेडिट हस्तान्तरण, अनुसंधान को सुलभ कराना। विदेशी छात्रों की मेजबानी करने वाले प्रत्येक HEI में एक अन्तर्राष्ट्रीय छात्र कार्यालय स्थापित किया जाएगा। उच्च गुणवत्ता वाले विदेशी संस्थानों के साथ अनुसंधान, शिक्षण और संकाय छात्र आदान प्रदान की सुविधा प्रदान की जाएगी। उच्च प्रदर्शन वाले भारतीय विश्वविद्यालय अन्य देशों में कैंपस स्थापित कर सकेंगे। दुनिया के शीर्ष 100 विश्वविद्यालयों में से कोई भारत में सुविधानुसार संचालन कर सकेगा। इनको भारत में अन्य स्वायत्त संस्थाने के समान नियामक, शासन और सामग्री मानदंडों हेतु विशेष छूट दी जाएगी।

• छात्र गतिविधि और भागीदारी

• सभी HEI छात्रों के लिए छात्रावास, चिकित्सा, खेलकूद, संस्कृति, कला क्लब, ईको क्लब, सामुदायिक सेवा परियोजना में वृद्धि करें। संस्थान में तनाव और भावनात्मक समायोजन हेतु परामर्श प्रणाली होनी चाहिए।

• छात्रों के लिए वित्तीय सहायता :–

• SC, ST, OBC और अन्य SEDSS से संबंधित छात्रों की योग्यता की प्रोत्साहित करना। निजी भ्म्प् छात्रों को मुफ्त जहाज यात्रा और छात्रवृत्तियों की व्यवस्था करें।

• उच्च शिक्षा में समानता

• सरकारी और HEIS द्वारा विशिष्ट कार्य किए जाएगें। SEDGS की शिक्षा के लिए सरकारी धन उच्च SER के लिए स्पष्ट लक्ष्य, सार्वजनिक और निजी HEIS में वित्तिय सहायता और छात्रवृत्ति प्रदान करना, आउटरीच कार्यक्रम आयोजित करना, प्रौद्योगिकी उपकरणों का विकास आदि करना। साथ ही HEIS में प्रवेश हेतु लिंग–संतुलन, उच्च गुणवत्ता वाले HEIS का विकास ओर समर्थन करना जो स्थानीय/भारतीय भाषाओं में या विभाषी रूप में पढ़ाते है। ये सभी कार्य सरकार द्वारा किए जाए।

- HEIS अवसर, लागत और शुल्क कम करें। प्रवेश प्रक्रिया ओर पाठ्यक्रम को समावेशी बनाए। सामाजिक, भावनात्मक और अकादमिक समर्थन और सलाह प्रदान करें। गैर भेदभाव और उत्पीड़न विरोधी नियमों को सख्ती से लागू करें। संस्थागत विकास योजनाओं का विकास करना। भवन और सुविधायें व्हीलचेयर सुलभ और अक्षम अनुकूल हो।

- व्यावसायिक शिक्षा
- व्यावसायिक शिक्षा का लक्ष्य और समयसीमा की कार्ययोजना तैयार कर इसे चरणबद्ध तरीके से शिक्षण संस्थाओं में लागू करना। सभी स्नातक डिग्री कार्यक्रमों में नामांकित छात्रों के लिए व्यवसायिक, पाठ्यक्रम उपलब्ध रहेंगे जो संस्थान स्वयं या उद्योग ओर सरकारी संगठनों के साथ मिलकर शिक्षा प्रदान करेंगे। उद्योगों को सहयोग से वन्युवेशन सेंटर स्थापित किए जाएंगे। भारत में विकसित व्यवसायिक ज्ञान (लोक विद्या) का निर्माण किया जायेगा। डभ्त्क निगरानी हेतु एक राष्ट्रीय समिति (NCLVE) का गठन करेगा। भारतीय मानकों को अन्तर्राष्ट्रीय कम संगठन के साथ संरेखित किया जाएगा।
- गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक अनुसंधान को उत्प्रेरित करना
- विश्वविद्यालयों में अनुसंधान हेतु NRF की स्थापना करना। यह बोर्ड ऑफ गवर्नर्स द्वारा शासित होगा, जिसमें सभी क्षेत्रों में सवोत्कृष्ट शोधकर्ता और नवप्रवर्तक शामिल होंगे। NRF अनुसंधान का बीजारोपण कर विकास और सुविधा देगा, सफलता प्राप्ति हेतु शोधकर्त्ता और सरकार की प्रासंगिक शाखाओं के साथ उद्योग के बीच एक संपर्क के रूप में कार्य करना। सभी प्रकार और सभी विषयों में सहकर्मी समीक्षिक अनुदान प्रस्ताव लागू करना।

उच्च शिक्षा की नियामक प्रणाली को बदलनाः–

HECI (भारतीय उच्च शिक्षा आयोग) के भीतर चार सरंचनाओं को स्थापित करना। जिसमें प्रत्येक वर्टिकल एक नई और एकल भूमिका निभाएगा जो नई नियामक योजना में प्रासंगिक, सार्थक और महत्वपूर्ण है। जिसमें प्रथम वर्टिकल परिषद होगा जो उच्च शिक्षा क्षेत्र के लिए सामान्य एकल बिन्दु नियामक के रूप में कार्य करेगा। दूसरा वर्टिकल राष्ट्रीय प्रत्यायन परिषद होगा। यह बुनियादी मानदंडों, सार्वजनिक स्व–प्रकटीकरण, सुशासन और परिणामों पर आधारित होगा। तीसरा वर्टिकल उच्च शिक्षा अनुसंधान परिषद होगा जो उच्च शिक्षा के वित्तपोषण का कार्य करेगा। चौथा वर्टिकल सामान्य शिक्षा परिषद होगा जो उच्च शिक्षा कार्यक्रमों के लिए अपेक्षित सीखने के परिणामों को तैयार करेगा।
इनकी कार्यप्रणाली पारदर्शी और सार्वजनिक प्रकटीकरण पर आधारित होगी और प्रौद्योगिकी का बढ़ावा देगी।

शिक्षा के व्यावसायिकरण पर अंकुश लगाना :–

निजी HEI सभी शुल्क को पारदर्शी और पूर्ण रूप से प्रकट करेंगे और नामांकन–अवधि के दौरान इनमें मनमानी वृद्धि नहीं होगी। सभी शिक्षा संस्थान अपने सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करेंगे। खुलासा होगा और आम जनता के लिए शिकायत निवारण तंत्र का सहारा लिया जाएगा।

उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए प्रभावी शासन और नेतृत्व की व्यवस्था :–

सभी उच्च शिक्षा संस्थानों का लक्ष्य नवाचार और उत्कृष्टता वाली स्वशासी संस्थान बनना होगा। इस हेतु समानता के आधार पर BOG (बोर्ड ऑफ गवर्नर्स) की स्थापना की जाएगी। BOG बाहरी हस्तक्षेप से मुक्त होगा और पारदर्शिता के माध्यम से जिम्मेदार और जवाबदेह होगा। यह HECL के दिशा–निर्देशों को पूरा करने के लिए जिम्मेदार होगा।

व्यवसायिक शिक्षाः–

पेशेवर या सामान्य शिक्षा प्रदान करने वाले सभी संस्थान, स्टेण्ड आलेन कृषि, कानूनी, स्वास्थ्य, तकनीकी विश्वविद्यालय समग्र और बहुविषयक शिक्षा प्रदान करने वाले संस्थान बनने का लक्ष्य रखेंगे। कुशल स्नातकों और तकनीशियनों नवोन्मेषी अनुसंधान और प्रौद्योगिकियों और प्रथाओं से जुड़े बाजार के माध्यम से कृषि उत्पादकता बढ़ाने के लिए क्षमता और गुणवत्ता दोनों में सुधार की आवश्यकता है। कृषि शिक्षा प्रदान करने वाली संस्थाओं को स्थानीय समुदाय को सीधे लाभ पहुँचाना चाहिए। कृषि प्रौद्योगिकी पार्कों की स्थापना के लिए एक दृष्टिकोण हो सकता है। न्याय की व्यापक पहुंच और समय पर वितरण के लिए कानूनी शिक्षा को विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी होना चाहिए।
स्वास्थ्य देखभाल शिक्षा प्रणाली का अर्थ एकीकृत होना चाहिए जिससे एलोपेथिक आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी होम्योपैथी और इसके विपरित की बुनियादी समझ होनी चाहिए। सामुदायिक चिकित्सा पर भी अधिक जोर दिया जाएगा। भारत को जीनोमिक अध्ययन, बायोटेक्नोलॉजी, नैनोटेक्नोलॉजी, AI 3Mh मशीनिंग, बिगडेटा एनालिसिस, मशीन लर्निंग आदि के साथ तंत्रिका–विज्ञन, स्वास्थ्य, पर्यावरण आदि क्षेत्रों में पेशवरों को तैयार करने में भूमिका निभानी चाहिए।
भरतीय भाषाओं, कलाओं और संस्कृति को बढ़ावा देना

• शिक्षा के सभी स्तरों पर छात्रों को सभी प्रकार की भारतीय कलाओं की पेशकश की जानी चाहिए और अन्य संस्कृतियों की सराहना भी की जानी चाहिए।

• भाषाओं को प्रासंगिक और जीवन्त बनाए रखने के लिए पाठ्य–पुस्तकों, कार्य पुस्तिकाओं, वीडियो, नाटकों, कविताओं, उपन्यासों, पत्रिकाओं आदि सहित उच्च गुणवत्ता वाली शिक्ष और प्रिंट सामग्री को सतत प्रवाह होना चाहिए, सीखने का हर स्तर पर स्कूल और उच्च शिक्षा के साथ एकीकृत किया जाना चाहिए।

• संगीत, कला, शिल्प, भाषा, कला और संस्कृति पर जोर देने के साथ त्रिभाषा सूत्र का कार्यान्वयन स्थानीय भाषा में पढ़ाना। उत्कृष्ट स्थानीय कलाकारों, लेखकों, शिल्पकारों और अन्य विशेषज्ञों की भर्ती। मानविकी, विज्ञान, खेल आदि में आदिवासी और पारम्परिक भारतीय ज्ञान को पाठ्यक्रम में शामिल करना।

• भारतीय भाषाओं, तुलनात्मक साहित्य, रचनात्मक लेखन, कला, संगीत दर्शन आदि में मजबूत विभाग और कार्यक्रम देशभर में लान्च और विकसित किए जाएंगे और इन विषयों में दोहरी डिग्री विकसित की जाएगी।

• प्रत्येक HEI का लक्ष्य छात्रों को कला, राचनात्मकता और देश के समृद्ध खजाने से परिचित कराने के लिए कलाकार इन–रेजिडेंस हो।

• HEI शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा का उपयोग करेंगे और द्विभाशी कार्यक्रमों की पेशकश करेंगे।

• अनुवाद और व्याख्या, कला और संग्रहालय प्रशासन, पुरातत्व, कलाकृति संरक्षण, ग्राफिक डिजाइन और वेब डिजाइन में उच्च गुणवत्ता वाले कार्यक्रम और डिग्री भी बनाएंगे।

• HEI देश के विभिन्न हिस्सों में भ्रमण, पर्यटन के द्वारा विविधता, संस्कृति, परम्पराओं और ज्ञान की समझ को बढ़ावा देगा।

• IITI की स्थापना के द्वारा अनुवाद और व्याख्या के लिए प्रोद्यौगिकी का व्यापक उपयोग करेगा।

• तीन भाषा फार्मूलों में उच्च शिक्षा में संस्कृत को मुख्य धारा में शामिल करने की ओर अग्रसर होंगे।

• शास्त्रीय भाषाओं और साहित्य का अध्ययन करने वाले संस्थानों और विश्वविद्यालयों का विस्तार, पांडुलिपियों को इकट्ठा करने, संरक्षित, अनुवाद, अध्ययन के मजबूत प्रयास करेगा।
भाषाओं को समर्पित विश्वविद्यालय बहुविषयक बनेंगे

• विश्वविद्यालय परिसर में पाली, फारसी, प्राकृत के लिए राष्ट्रीय संस्थान स्थापित किए जाएंगे।

• भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित प्रत्येक भाषा के लिए विद्वानों और देशी वस्तुओं से मिलकर अकादमियों की स्थापना की जाएगी इस हेतु सरकार द्वारा राज्य सरकारों को परामर्श और सहयोग किया जाएगा।

• लुप्तप्राय और सभी भारतीय भाषाओं और उनसे जुड़ी समृद्ध स्थानीय कलाओं और संस्कृति को संरक्षित करने के लिए एक वेब आधारित प्लेटफार्म के माध्यम से प्रलेखित किया जाएगा।

• सभी उम्र के लोगों के लिए भारतीय भाषाओं, कला और संस्कृति के अध्ययन हेतु छात्रवृत्ति की स्थापना की जाएगी।

समग्र बहुआयामी शिक्षा :–

सीखने के वातावरण को सुनिश्चित करने के लिए आकर्षक पहले की जाएगी। सभी संस्थानों और फैकल्टी को उच्च शिक्षा योग्यता के एक व्यापक ढांचे के भीतर पाठ्यक्रम शिक्षाशास्त्र और मूल्यांकन हेतु नवाचार की स्वायत्ता होगी। कार्यक्रमों को ऑनलाइन और पारम्परिक इन क्लास मोड में स्थिरता सुनिश्चित करता है। HEIS मानदंड आधारित ग्रेडिंग प्रणाली की ओर बढ़ेगा। विश्वविद्यालय और कॉलेज उच्च गुणवत्ता वाले सहायता केन्द्र स्थापित करेंगे और सामाजिक आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि के छात्रों को प्रोत्साहित करने हेतु धन और शैक्षणिक संसाधन दिए जाएंगे। शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक कल्याण सुनिश्चित करने हेतु व्यावसायिक शैक्षणिक और कैरियर परामर्श उपलब्ध होगा।

तर्कसंगत संस्थागत वास्तुकला :–

• उच्च शिक्षा हेतु जिस नई दृष्टि और वास्तुकला की परिकल्पना की गयी वे बड़े संसाधनों से भरपूर जीवन्त बहु–विषयक संस्थान है। उच्च शिक्षा संस्थानों को बहुविषयक विश्वविद्यालयों को HIE नॉलेज हब में बदल दिया जाएगा। प्रत्येक का लक्ष्य 3000 या उससे अधिक छात्रों को रखना होगा। बहु–विषयक संस्थान,
उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षण, अनुसंधान और सामुदायिक जुड़ाव के स्नातक कार्यक्रम प्रदान करता है। संस्थानों के राज स्पेक्ट्रम की अनुमनि मिलेगी जो अनुसंधान और शिक्षण गहन विश्वविद्यालयों और स्वायत्त डिग्री–अनुदान देने वाले होंगे। ग्रेडेड मान्यता की एक पारदर्शी प्रणाली के माध्यम से कॉलेजों की ग्रेडेड स्वायत्तता हेतु चरणदार नेत्र स्थापित किया जाएगा।

नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (NRF) :–
अनुसंधान और नवाचार की विस्तारित करने के लिए नई इकाई (NRF) स्थापित की जाएगी। NRF का लक्ष्य अनुसंधान की संस्कृति विकसित करना जहां अनुसंधान क्षमता वर्तमान में सीमित है। प्रतिस्पर्धात्मक रूप में सभी विषयों में अनुसंधान को निधि देगा। सफल अनुसंधान को मान्यता दी जाएगी और सरकारी एजेन्सियों के साथ–साथ उद्योग और संगठनों के साथ घनिष्ठ संबंधों के माध्यम से कार्यान्वित किया जाएगा।
छात्रों के लिए वित्तिय सहायता के लिए अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति अन्य पिछड़ा वर्ग और अन्य SEDGS छात्रों के प्रोत्साहन हेतु छात्रवृत्ति, प्रगति को समर्थन, पोषण और ट्रेक के लिए राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पोर्टल का विस्तार किया जाएगा। मुक्त और दूरस्थ शिक्षा के विस्तार से सकल नामांकन अनुपात को 50 प्रतिशत तक बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेंगे। ऑनलाइन पाठ्यक्रम और डिजिटल रिपॉजिटरी, अनुसंधान हेतु घना बेहतर छात्र सेवाओं, MOOCs की क्रेडिट आधारित मान्यता आदि को सुनिश्चित किया जाएगा कि ये सभी इन क्लास कार्यक्रमों की गुणवत्ता जैसे उच्चतम हो। शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीकरण को संस्थागत सहयोग और छात्र संकाय गतिशीलता के माध्यम से सुगम बनाया जाएगा। देश में विश्व स्तर के विश्वविद्यालयों को प्रवेश की अनुमति दी जाएगी।
प्रेरित, ऊर्जावान और सक्षम फैकल्टी
HEI में फेकल्टी भर्ती के लिए स्वतंत्र और पारदर्शी प्रक्रिया होनी चाहिये जिसकी गुणवत्ता पर ही उसकी सफलता निर्भर हैं। स्वीकृत ढ़ाचे ने भीतर स्वयं के पाठ्यक्रम और शैक्षणिक दृष्टिकोण को डिजाइन करने की स्वतन्त्रता होगी। को पुरस्कार, पदोन्नति, मान्यता और आन्दोलन के माध्यम से प्रोत्साहित किया जाएगा।

HEIS में प्रभावी शासन और नेतृत्व :–
स्वायत्तता पर आधारित संस्थागण शासन, अकादमिक, प्रशासनिक और वित्तिय प्रत्येक उच्च शिक्षा संस्थान के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स के साथ कल्पना की जाती है। ये जटिल परिस्थितियों का प्रबन्धन के साथ प्रशासनिक और नेतृत्व क्षमताओं का भी प्रदर्शन करेंगे।
स्थानीय स्कूलों में छात्र–शिक्षण हेतु मजबूत व्यवहारिक प्रशिक्षण शामिल है। परामर्श हेतु राष्ट्रीय मिशन की स्थापना की जाएगी जिसमें उत्कृष्ठ संकाय सदस्यों का पूल होगा जो विश्वविद्यालय शिक्षकों को पेशेवर सहायता प्रदान करने के इच्छुक होंगे।

व्यावसायिक शिक्षा :–
स्टेण्ड अलोन, तकनीकी विश्वविद्यालय, स्वास्थ्य, कानून, कृषि, बहु–अनुशासनात्मक संस्थान बनाने का लक्ष्य रखेंगे।

शिक्षा प्रोद्यौगिकी :–
- NETF स्वायत्त निकाय बनाया जाएगा। शिक्षा के सभी स्तरों में प्रौद्योगिकी का उचित एकीकरण कक्षा प्रक्रियाओं में सुधार, शिक्षक पेशेवर, विकास का समर्थन, वंचित समूहों के लिए शैक्षिक पहुंच बढ़ाने और शैक्षिक योजना, प्रशासन और प्रबंधन को कारगर बनाने के लिए किया जाएगा। HEIS विघटनकारी प्रौद्योगिकियों पर अनुसंधान, ऑनलाइन पाठ्यक्रमों सहित शिक्षण सामग्री और पाठ्यक्रम बनाने में सक्रिय भूमिका निभाएगा।

ऑनलाइन शिक्षा और डिजिटल शिक्षा :–
ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए, जहां भी पारम्परिक और व्यक्तिगत रूप से शिक्षा के तरीके संभव न हो, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को वैकल्पिक तरीकों के साथ सुनिश्चित किया जाए। ई–शिक्षा आवश्यकताओं को डभ्म्क में डिजिटल बुनियादी ढांचे सामग्री क्षमता निर्माण हेतु समर्पित इकाई बनाई जाएगी।

भारतीय भाषाओं का प्रचार :–
भारतीय भाषाओं के संरक्षण, विकास और जीवंतता को सुनिश्चित करने के HEIS मातृभाषा को शिक्षा की ताकत, उपयोग और जीवन्तता को बढ़ावा देने हेतु द्विभाषी रूप से कार्यक्रमों की पेशकश करेंगे। IITI आदि प्रेरित पाली, फारसी और प्राकृत आदि शास्त्रीय भाषाओं का संरक्षित और बढ़ावा दिया जाएगा।

वित्त पोषण शिक्षा :–
शिक्षा एक सार्वजनिक सेवा है और इसे व्यावसायिक गति विवद्या या लाभ का स्त्रोत नहीं होना चाहिए इस हेतु नियंत्रण और संतुलन के साथ कई तंत्र उच्च शिक्षा के व्यावसायीकरण को रोकेंगे।
केन्द्रीय सलाहकार बोर्ड को मजबूत किया जाएगा। MHRD और राज्यों के संबन्धित शीर्ष निकायों के सहयोग से कायाकल्प किया जाएगा। CABE निरंतर देश में शिक्षा की दृष्टि को विकसित स्पष्ट, मूल्यांकन, संशोधन हेतु जिम्मेदार होगा। यह संस्थागत ढांचों का निर्माण और लगातार समीक्षा करेगा।

REFERENCES:

1. Kumar, K. (2005). Quality of Education at the Beginning of the 21st Century: Lessons from India. Indian Educational Review.
2. Draft national Education Policy 2019, https://innovate.mygov.in/wpcontent/ uploads/2019/06/mygov 15596510111. pdf
3. National Education Policy 2020. https://www.mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd /files/nep/NEP_Final_English.pdf referred on 10/08/2020.
4. Yojana Magazine
5. Other Paper Articles